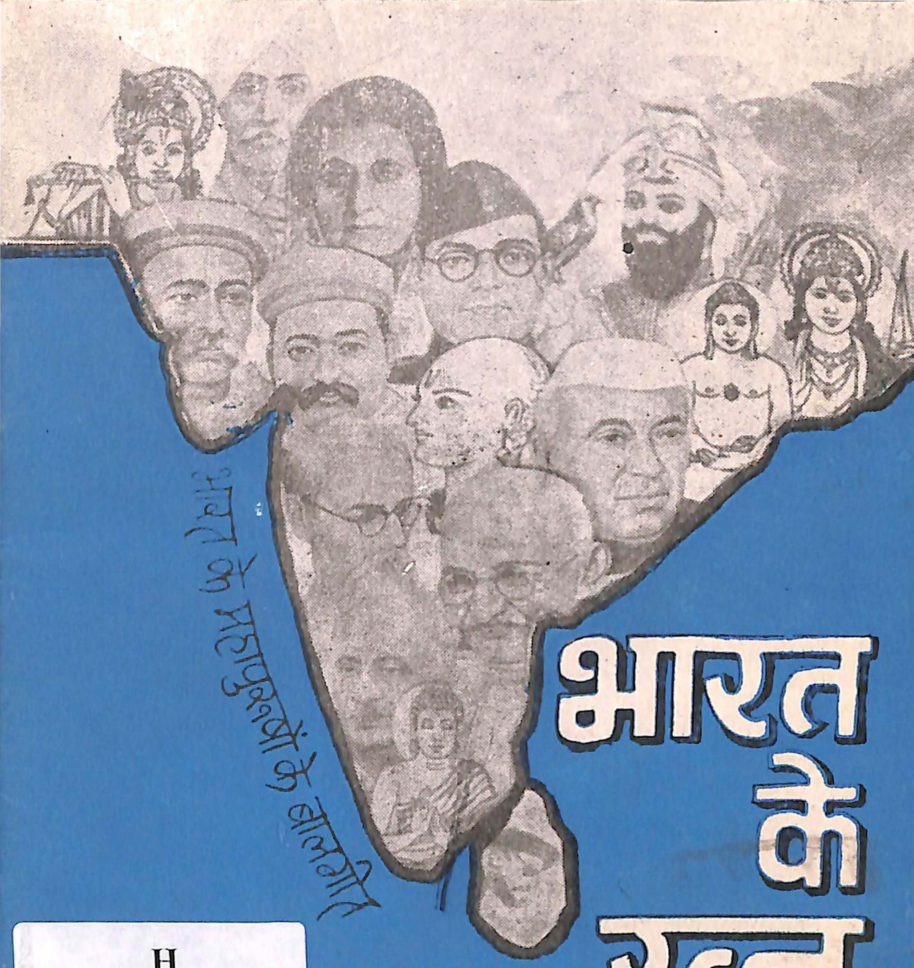

भारत के महापुरुषों के बालगीत

भारत के रत्न

भाग–२

चन्द्रपाल सिंह मयंक

H
398.8
Y 1 B

H
398.8
Y1B

भारत के रत्न

(भारत के महापुरुषों के बालगीत)

दूसरा भाग

चन्द्रपालसिंह यादव 'मयंक'

हिमाचल पुस्तक भण्डार
गांधी नगर, दिल्ली-110031

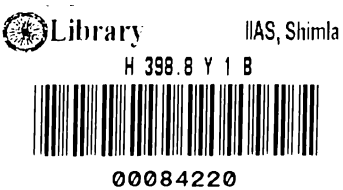
Library IIAS, Shimla
H 398.8 Y 1 B
00084220

© लेखक

प्रकाशक : हिमाचल पुस्तक भंडार
JX/221, सरस्वती भंडार
गांधीनगर, दिल्ली-110031

संस्करण : 1993

मूल्य : सात रुपये

मुद्रक : एस.वी. ऑफसेट वर्क्स करतार नगर, दिल्ली-53

BHARAT KE RATAN-2 (Hindi)
by Chandrapal Singh Yadav 'Mayank' Price Rs. 7.00

देश की नई पीढ़ी को

नन्हे-मुन्ने भाई-बहनो,

'भारत के रत्न' के प्रथम भाग को तुमने हाथों-हाथ लिया। बड़े प्रेम से अपनाया। वह थी ही ऐसी चीज़। मुझे पहले से ही विश्वास था, कि तुम सब उसे पढ़ कर अपनाओगे।

तो लो, 'भारत के रत्न' का यह द्वितीय भाग। मुझे विश्वास है कि इसे भी तुम उसी उत्साह से अपनाओगे और भारत के इन जगमगाते रत्नों के चरण-चिह्नों पर चल कर तुम भी अपनी पहचान बनाओगे।

261, फेथफुलगंज, कैंट,
कानपुर-208004

तुम्हारा बड़ा भैया,
चन्द्रपालसिंह यादव 'मयंक'

इनके चरण-चिन्ह पर चलकर

जगमग-जगमग ! झिलमिल-झिलमिल !
रत्न चमकते चम - चम - चम।
कैसी प्रभा बिखेर रहे हैं,
देख नहीं पाते हैं हम !

आंखें नहीं ठहरने पातीं।
आंखें बरबस झंप-झंप जातीं।
अनुपम चमक देख चकरातीं।
मन में साहस दीप जलातीं।

बेमिसाल ये रत्न सभी हैं,
हमसे श्रद्धा - आदर पाते !
इनके चरण - चिह्नों पर चलकर
हम भी यदि ऐसे बन पाते !

तो फिर क्या था, जन्म सफल था !
जीवन का उद्देश्य सफल था !
त्याग - तपस्या का सम्बल था !
पथ पर बढ़ चलने का बल था !

—चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक'

क्रम

महात्मा गांधी	7
डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद	9
डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्	11
'भारत-रत्न' जवाहरलाल नेहरू	13
पंडित मोतीलाल नेहरू	15
डाक्टर रवीन्द्रनाथ टैगोर	17
महामना मदनमोहन मालवीय	19
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन	21
लोकमान्य बालगंगाधर तिलक	23
अमर शहीद गणेशशंकर विद्यार्थी	25
क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद	27
नेताजी सुभाषचंद्र बोस	29
सरदार वल्लभभाई पटेल	31
बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय	33

: 6 :

भारत-कोकिला सरोजिनी नायडू 35
सर चंद्रशेखर वेंकटरमन 37
लालबहादुर शास्त्री 39
आचार्य विनोबा भावे 41
श्रीमती इंदिरा गांधी हो गयीं अमर 43
दयालुता की मूर्ति—मदर टैरेसा 45
जग को स्वर्ग बनाना है 47

महात्मा गांधी

बच्चो, 'गांधीजी' भारत के
'राष्ट्रपिता' थे कहलाते।
वे 'महात्मा' ही थे, इससे
थे सबसे आदर पाते।

दुखियों की पुकार सुन कर वह
अति व्याकुल हो जाते थे।
उनका कष्ट मिटाने को वह
तेजी से बढ़ आते थे।

सत्य—अहिंसा—सत्याग्रह के
थे उनके विचित्र हथियार।
जिनसे युद्ध किया जीवन भर;
हिंसा ने मानी थी हार।

वह थे सत्य-स्वरूप सदैव
सत्य-व्रत का करते पालन।
भारत के स्वातंत्र्य-युद्ध का
करते थे वह संचालन।

टिका न बापू के सम्मुख
भारत में अंगरेजी शासन।
स्वतंत्रता लाये भारत में;
कटे गुलामी के बन्धन।

दीन-हीन जो जन अछूत थे,
उन सबको भी अपना कर।
नाम जगत में सदा-सदा को
गांधीजी कर गये अमर।

डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद

थे भारत के प्रथम राष्ट्रपति
डॉक्टर श्री राजेन्द्र प्रसाद।
थे महान् विद्वान सरल अति—
सदा किये जायेंगे याद।

कांग्रेस के भारी नेता,
पर लगते थे स्वयं किसान।
कष्ट सहन कर लेते थे, पर
होंठों पर रहती मुस्कान।

आठों पहर देश वालों का
और देश का रहता ध्यान।
सोचा करते थे सदैव वह—
कैसे हो सबका कल्याण!

मूल-मंत्र उनके जीवन का;
सादा जीवन, उच्च विचार!
सबके हित में अपना हित,
औ' सकल विश्व अपना परिवार।

भारत की जनता ने उनको
था सर्वोच्च दिया सम्मान।
कितना सरल स्वभाव—न उनको
रंचक छू पाया अभिमान।

कई वर्ष तक रहे राष्ट्रपति
किया ग्रहण पद से अवकाश।
भारत-रत्न वास्तव में थे,
उनका जीवन दिव्य प्रकाश।

डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

थे दूसरे राष्ट्रपति भारत
के डॉक्टर राधाकृष्णन।
बहुत बड़े विद्वान, दार्शनिक!
श्रद्धा करता था जन-जन।

बहुत दिनों से इनके होते
रहे विदेशों में व्याख्यान।
उनकी धाक मानते थे सब;
जग के चोटी के विद्वान।

लिखे ग्रंथ विद्वत्तापूर्ण थे
कितने ही इन ने भारी।
जिनसे हुई प्रभावित इनसे
बच्चो! तब दुनिया सारी।

'भारत-रत्न' सर्वपल्ली—
राधाकृष्णन् थे भारत-रत्न!
भारत का सम्मान बढ़ाने
का करते वह सदा प्रयत्न।

थे द्वितीय राष्ट्रपति यही—
इन पर सब भारत को अभिमान।
सभी मनाते—हों शतजीवी;
ऊँचा करें देश का मान।

दोनों ही राष्ट्रपति देश के
बच्चो थे भारी विद्वान।
'भारत-रत्न' उपाधि देश की
थी इनको की गई प्रदान।

'भारत-रत्न' जवाहरलाल नेहरू

योग्य पिता के योग्य पुत्र थे,
भारत-रत्न जवाहरलाल ।
थे प्रधान-मंत्री भारत के;
थे सचमुच भारत के लाल।

सूरज से यह चमक उठे थे,
भारत के राष्ट्रीय गगन में।
पराधीनता दीन देश की,
खटक उठी थी इनके मन में।

भारत को स्वतंत्र करने में
कष्ट सहे थे बड़े-बड़े।
विपदाओं से, कष्टों से यह
ताल ठोंक कर खूब लड़े।

बच्चों के थे चाचा नेहरू !
बच्चे इनको करते प्यार।
नेहरूजी का जन्म-दिवस
बच्चों का 'बाल-दिवस' त्यौहार !

लिखे ग्रंथ थे बड़े-बड़े;
था जिनमें भरा ज्ञान-भंडार।
राजनीति, विद्वत्ता, योग्यता—
का आदर करता संसार।

शांति चाहते, किंतु न अन्यायी
को शीश झुकाते यह !
निर्भय होकर अत्याचारी,
दुश्मन से टकराते यह !

पंडित मोतीलाल नेहरू

पूज्य पिता 'चाचा नेहरू' के
थे 'श्री पंडित मोतीलाल'।
बहुत बड़े बैरिस्टर—इनका
राजाओं का-सा था हाल।

थे अति प्रतिभाशाली, प्रतिभा
न्याय-क्षेत्र में थी चर्चित।
वाणी में था ओज बहुत,
थी स्वयं शारदा ही अर्पित।

इनके अनुपम ठाठ-बाट थे,
बाँकी अजब-अनोखी शान।
किंतु देश के लिए तज दिया
सब कुछ ! थे अत्यन्त महान्।

स्वतंत्रता के लिए युद्ध में
कूद पड़ा इनका परिवार!
तपा-तपाया था हर प्राणी;
देश-प्रेम की लगन अपार।

है प्रयाग में शीश उठाये
खड़ा हुआ 'आनन्द भवन'!
था निवास-गृह इनका सुंदर;
कांग्रेस का कार्य-सदन।

सचमुच ही 'आनन्द-भवन' में
तब आनन्द बरसता था!
फूला-फूला निज वैभव पर,
उसका कण-कण हंसता था।

डाक्टर रवीन्द्रनाथ टैगोर

विश्व-विदित ऊंचे साहित्यिक
हुए 'रवीन्द्रनाथ टैगोर' !
इनकी पुस्तक 'गीतांजलि' की
हुई प्रशंसा चारों ओर !

उसके गीत विश्व में अनुपम ।
अद्वितीय साहित्य - छटा ।
ज्ञान-भक्ति का सुन्दर मिश्रण,
घिरती थी आनन्द - घटा ।

पुरस्कार 'नोबुल प्राइज़' था
हुआ इसी पुस्तक पर प्राप्त ।
इनकी सारी रचनाओं में
बच्चो ! उच्च कला है व्याप्त ।

उपन्यास—नाटक—कहानियाँ
लिखीं एक से एक महान् !
मान गये थे उनका लोहा
दुनिया के सारे विद्वान !

'शांति-निकेतन' शिक्षा-संस्थान
खोल गये, जिससे बंगाल
हुआ अनोखा धनी ! विश्व में
ऊंचा हुआ देश का भाल !

भारत-मां के जिन पुत्रों ने
किये प्रशंसा के हैं काम।
उनमें चमक रहा है जग-मग
कविवर श्री रवीन्द्र का नाम।

महामना मदनमोहन मालवीय

एक विश्वविद्यालय बच्चो !
काशी में है बहुत बड़ा।
जो गौरव से शीश उठाये
शिक्षा देता वहां खड़ा।

यहां सब विषय, कला और
साहित्य पढ़ाये हैं जाते।
भारत के कोने-कोने से
विद्यार्थी पढ़ने आते।

हुआ विश्वविद्यालय है यह
सारी दुनिया में सरनाम।
भावी पीढ़ी को शिक्षित
करने का करता पावन काम।

मालवीयजी ने उसको स्थापित
कर किया अमित उपकार।
भारतवासी महामना को
भूल न सकते किसी प्रकार।

हिन्दू-सभा व कांग्रेस से—
दोनों से थी लगी लगन।
किया सुशोभित था जीवन में
दोनों का अध्यक्षासन।

श्वेत वस्त्र थे धारण करते;
श्वेत रंग से इनको प्यार।
मानो स्वयं सत्वगुण आया
था धर के इनमें आकार।

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन

जहां नाम और गुण समान हों,
मिल बैठे हों आकर पास।
इसके अति सुन्दर उदाहरण
थे 'टंडन पुरुषोत्तमदास'।

कांग्रेस के ऊंचे नेता,
रहे विधान-सभा-अध्यक्ष !
स्वाभिमान की मूर्ति, विचारों
में दृढ़, थे पर्वत प्रत्यक्ष।

किन्तु देखने में बिल्कुल ही
ऋषियों का था उनका वेश।
इसीलिए 'राजर्षि' उन्हें
श्रद्धा से कहता भारत देश।

हिन्दी के अनन्य प्रेमी थे,
आठों याम उसी का ध्यान।
उसे राष्ट्रभाषा बनने का
दिला गये अनुपम सम्मान।

हिन्दी है समृद्ध सब तरह!
यही राष्ट्रभाषा सोहे।
साहित्यिक-भंडार विपुल है,
जो पाठक का मन मोहे।

थे भारत के रत्न, किन्तु था
जीवन इनका सन्त-समान!
सभी एक स्वर में कहते हैं—
थे सचमुच राजर्षि महान्!

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

'तिलक बाल गंगाधर' थे
मां के मस्तक के पुण्य-तिलक।
निज सत्कर्मों के कारण यह
याद रहेंगे युग-युग तक।

अंगरेजी - शासन के प्रति
था विरोध का इनका नारा;
'हम स्वराज्य लेंगे, स्वराज्य है
जन्मसिद्ध अधिकार हमारा।'

अंगरेजों ने इन्हें देश से
निर्वासित था कर डाला।
'बर्मा' के मांडले जेल में
'लोकमान्य' को था डाला।

थे भारी विद्वान् दार्शनिक—
'गीता-तत्व-सार' लिख कर।
मानवता को सदा-सदा के
लिए दे गये भेंट अमर।

बड़े शक्तिशाली थे, किन्तु
गर्म-दल के थे यह नेता।
लोकमान्य थे-लोक-हृदय के
थे प्रभावशाली नेता ।

भारत के रत्नों में यह भी
चमक रहे हैं चम-चम-चम !
इनके जीवन में भी बच्चो—
उच्च प्रेरणा पाते हम ।

अमर शहीद गणेशशंकर विद्यार्थी

थे गणेशशंकर जी बच्चो !
त्याग-नम्रता के अवतार।
राष्ट्र-प्रेम और देश-प्रेम की
बहती थी तन-मन में धार।

थे शरीर के दुबले-पतले;
किन्तु शक्तिशाली था मन।
उच्च भावनाओं से प्रेरित
विद्यार्थी जी का जीवन।

हिन्दू - मुस्लिम - सिख - इसाई
सब भारत - मां की सन्तान।
हेल-मेल से साथ रहें सब,
एक पिता के पुत्र समान।

था इनके 'प्रताप' का फैला
भारत में सब ओर प्रताप।
संपादक थे, नेता थे, सेवक थे
—अपनी उपमा आप।

अंगरेजों ने हिन्दू - मुस्लिम
दंगों की भड़काई आग।
उसे बुझाने को दे बैठे,
प्राणों की आहुति का भाग।

अमर रहेगा बच्चो युग-युग
तक 'गणेश जी' का बलिदान!
'बापू' भी सुन कर थे रोये;
थे यह निस्संदेह महान!

क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद

बच्चो, भारत की स्वतंत्रता
के हित होते रहे प्रयत्न।
करके क्रान्ति क्रान्तिकारी भी
करते रहे सदा से यत्न।

सभी वीर थे, सभी निडर थे;
सब ही की थी अमर लगन।
किया अनेकों ने न्योछावर,
मातृभूमि के हित जीवन।

हंसते-हंसते प्राण दे दिये,
सब कर गये सुनहले काम।
पर 'आजाद चन्द्रशेखर' का,
उन वीरों में ऊपर नाम।

सोचते रहते थे दिन-रात
देश की आजादी की बात।
'क्रान्ति का फूँकें ऐसा मंत्र—
कि जिससे भारत बने स्वतंत्र।'

आह! था बदन कि फौलाद?
उन्हें सब कहते थे 'आजाद'।
क्रान्तिकारी था अनुपम वीर;
बना था वज्र-समान शरीर।

शूरवीर ने किये देश के
लिए निछावर हंस कर प्राण।
इनको याद करेगा बच्चो!
सदा-सदा को हिन्दुस्तान।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस

बच्चो, नेता जी 'सुभाष थे
उच्च 'आई. सी. एस.' अफसर।
किन्तु देश के लिए मार दी
उस ऊंचे पद पर ठोकर।

कांग्रेस का अध्यक्षासन—
किया गया था इन्हें प्रदान।
इनकी अनुपम देश-भक्ति से
थे अंगरेज हुए हैरान।

अंगरेजों ने इन्हें किया था
नजरबन्द इनके ही घर।
पर चतुराई, तीक्ष्ण बुद्धि से
गये देश से यह बाहर।

दीर्घ शरीर और गोरा रंग
वेश बदल कर बने पठान !
स्वतंत्रता - संग्राम बीच था
नेता जी का योग महान् !

फिर 'आजाद हिन्द सेना' का
सिंगापुर में कर निर्माण !
भारत को स्वतंत्र करने का
किया अनोखा था अभियान !

प्राणों को भी किया निछावर;
हुए देश हित हंस बलिदान !
'नेता जी' सुभाष थे सचमुच
'नेता' भारत-रत्न महान् ।

सरदार वल्लभभाई पटेल

राजनीति में बड़े योग्य थे
धीर-वीर सरदार पटेल।
मातृभूमि के लिए इन्होंने
कष्ट सहे थे, काटी जेल।

पर स्वतंत्र भारत में करके
गृहमंत्री के पद पर काम—
बिखरा भारत एक कर दिया!
अमर हो गया इनका नाम!

दुष्टों को शिक्षा देने में
थे ये अपनी उपमा आप।
सज्जन के हित सुखदाता थे,
दुर्जन को देते सन्ताप।

थे सरदार पटेल देश-उपवन
के बड़े सुगन्धित फूल !
इनको हम सब भारतवासी
नहीं कभी भी सकते भूल।

इनके अग्रज ने भी बच्चो
लड़ कर स्वतंत्रता-संग्राम
मातृभूमि-हित कष्ट उठाये,
अमर कर दिया अपना नाम ।

थे 'पटेल बिट्ठलभाई' वह !
देश-भक्ति में बढ़-चढ़कर !
दोनों ही भाई थे अनुपम
देशभक्त ! वर ! नर-नाहर !

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

है साहित्य प्रभावित करता
जन-जन की विचारधारा।
राष्ट्रीय भावों से प्रेरित
हो जन-आंदोलन सारा।

'बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय'
हुए बच्चो! भारी विद्वान।
बंगला भाषा में लिख-लिख कर
फूंक रहे मुर्दों में जान।

बंकिम बाबू ने कितने ही
प्रेरक उपन्यास लिख कर!
नई प्रेरणा, नई भावना
भारतीय जनता में भर!

देश-भक्ति जागृति के हितकर
भाव भर दिये जन-जन में।
त्याग-जागरण और संगठन
मंत्र जगाया जीवन मे।

सारे उपन्यास सुंदर हैं,
'आनन्दमठ' है सर्वोत्तम।
'देशभक्ति' औ' शौर्य-वीरता
की शिक्षा उसमें अनुपम।

जो 'बंदेमातरम' गीत है
समारोह में गाते हम।
वह बंकिम बाबू की रचना
'आनन्दमठ' में पाते हम।

भारत-कोकिला सरोजिनी नायडू

भारत की कोकिला कहाईं—
सरोजिनी नायडू महान् !
छेड़ा करती थीं गीतों की
कैसी मीठी-मीठी तान !

लिखती थीं कोयल के मीठे
गीतों से भी मीठे गीत
उच्च भावनाओं का उनमें
होता था सुमधुर संगीत !

बड़ी ख्याति पाई थी, लिखकर
अंगरेजी भाषा में गीत।
भाव और भाषा अति कोमल !
लिया सभी का मन था जीत !

नारी होकर राज-काज का
भी अनुभव था इन्हें अपार !
थीं सुकुमार—उठाया लेकिन
उच्च गवर्नर—पद का भार !

भारत में उत्तर-प्रदेश के
'राज्यपाल' पद पर रह कर ।
कई वर्ष तक सेवा की थी
भारत-माता की डट कर ।

मन में था साहित्य-प्रेम भी !
राजनीति मे भी निष्णात !
सरोजिनी नायडू कर गईं
अमर सदा को अपनी ख्याति ।

सर चंद्रशेखर वेंकटरमन

बच्चो, है प्रत्येक क्षेत्र में
हुए यहां पर रत्न महान्।
भला अछूता रह सकता था
कैसे भारत में विज्ञान ।

सी. वी. रमन बड़े वैज्ञानिक
जन के सम्मानित विद्वान।
हुआ प्रभावित इनकी नई
खोज से दुनिया का विज्ञान।

नोबुल प्राइज़ जो दुनिया का
पुरस्कार है श्रेष्ठ महान्।
'रमन महाशय' को आदर से
किया गया था वही प्रदान।

सचमुच भारत का दुनिया में
इन ने मान बढ़ाया था।
अपनी अद्वितीय खोजों से
जग में नाम कमाया था।

भारतीय वैज्ञानिक अब भी
इसी शृंखला में बढ़ कर !
नई-नई खोजें कर-करके
करते अपनी कीर्ति अमर !

डॉ० हरगोविन्द खुराना ने भी
जग में सुयश कमाया है।
नोबुल पुरस्कार जीता, भारत
का मान बढ़ाया है।

लालबहादुर शास्त्री

भारत-मां का 'लाल' 'बहादुर'
'लालबहादुर' था बलवान !
सचमुच भारत के रत्नों में
बना लिया अनुपम स्थान !

यद्यपि था उनका क़द छोटा;
किन्तु हृदय दृढ़, ज्यों फौलाद !
सब पर अमिट छाप छोड़ी है,
अमर रहेगी उनकी याद !

कठिन समय आने पर उन ने
साहस - धैर्य नहीं खोया !
स्वयं असीम धैर्य दिखला कर,
बीज वीरता का बोया !

अपनी प्यारी मातृभूमि पर
जब चढ़ आया पाकिस्तान !
बन कर सिंह वीर हुंकारा;
टूट पड़ा केहरी-समान !

जन्म लिया था निर्धन घर मे
पहुँचे थे कितने ऊपर !
लालबहादुर शास्त्री चमके !
थे प्रधान-मंत्री बनकर !

'ताशकन्द' में किन्तु रत्न वह
क्रूर काल ने छीन लिया !
आठ-आठ आँसू सब रोये;
सबका हृदय विदीर्ण किया !

आचार्य विनोबा भावे

सुनते हैं यह—कभी बालि से
भूमि मांग बैठे भगवान।
'सन्त विनोबा' किन्तु सत्य ही
दिशि-दिशि मांग रहे 'भूदान'।

भूमि प्राप्त कर फिर देते थे
उसे भूमिहीनों में बांट।
सोचो तो बच्चो था उनका
यह कितना उपकार विराट्।

यही नहीं यमुना-चम्बल की
घाटी में था बड़ा प्रबल।
जिसको पकड़ न पाता कोई—
ऐसा नामी डाकू-दल।

उसके अपने उपदेशों से
की अद्‌भुत प्रेरणा प्रदान।
आकर स्वयं हो गये बन्दी!
धन्य विनोबा सन्त महान्।

पारस पत्थर को छूकर ज्यों
लोहा सोना बन जाता!
मामूली लोहे का कितने
गुना मूल्य है बढ़ जाता!

महापुरुष वैसे ही लोगों
की आत्माओं को छूकर।
जगमग-जगमग कर देते हैं
देते हैं अनुपम द्युति भर।

श्रीमती इंदिरा गांधी हो गयीं अमर

हा हन्त ! इन्दिराजी को हमसे
छीन ले गया क्रूर काल !
भारत ही क्यों ? सारी दुनिया
रोती है आंसू ढाल-ढाल !

दानवता ने मानवता की
छाती पर वज्र प्रहार किया !
मानवता की हत्या कर दी
व्याकुल सारा संसार किया !

था नहीं किसी को हाय ! स्वप्न
में भी इसका आभास कभी !
विश्वासघात कर देंगे वे;
जिन पर करते विश्वास सभी !

कितना जघन्य ! कितना निर्मम !
मर गया हाय ! विश्वास यहां !
जिससे जगमग था सकल विश्व
वह शीतल तीव्र प्रकाश कहां ?

खोकर यों देवि इन्दिरा को
निष्प्राण हुए भारत वाले !
डस गये भयानक षड्यंत्रों के
देखो—क्रूर नाग काले !

वह मर कर भी हो गयीं अमर !
वर कीर्ति-ज्योति चमके चम-चम !
दिखलावेगा सबको सत्पथ
युग-युग तक उनका जीवन-क्रम !

दयालुता की मूर्ति—मदर टैरेसा

दयालुता की मूर्ति विश्व में
'मदर टैरेसा' हैं अनुपम !
सेवा - कार्य किया करती हैं
नन्हें - मुन्नों का हरदम !

कलकत्ते में बना हुआ है
मदर टैरेसा का आश्रम
सेवा-भाव, चिकित्सा, शिक्षा—
रहता वहां कार्य का क्रम।

अस्पताल हैं खुलवाये;
है वहां चिकित्सा की जाती।
दुख से पीड़ित बच्चों के
जीवन में हंसी-खुशी आती।

सेवा की प्रतिमूर्ति कहें; तो
अतिशयोक्ति है जरा नहीं।
सरल दया की देवी-सी हैं;
मन घंमड है जरा नहीं।

'नोबुल पुरस्कार' इनको भी
बच्चो ! दिया गया इस बार।
जान गया सेवा की महिमा
कोने - कोने है संसार।

'मदर टैरेसा' करतीं देखो—
हैं कितने महत्व का काम !
सचमुच भारत-रत्न ! विश्व में
फैल गया है इनका नाम।

जग को स्वर्ग बनाना है

भूमि उर्बरा है भारत की,
उपजें इसमें रत्न अनेक।
अपने - अपने क्षेत्रों में सब
चमके खूब एक से एक

चम-चम-चम-चम चमक रहे हैं
सारे ही रत्नों के नाम।
सबके बारे में बतलाऊं
बच्चो ! नहीं सरल यह काम।

फिर भी कुछ भारत - रत्नों से
परिचित तुम्हें कराया है।
जिन ने अपने सत्कर्मों से
जग में सुयश कमाया है।

इनके बारे में पढ़ कर तुम
शिक्षा सदा ग्रहण करना
जीवन में कुछ कर जाना है—
यही भाव मन में भरना।

जो मन में दृढ़ निश्चय करते,
वही सफलता पाते हैं।
उन्नति के एवरेस्टों पर वे
खट-खट चढ़ते जाते हैं।

हमको मानव जीवन पाकर
सबको सुख पहुंचाना है!
हेल-मेल से जीवन जीकर
जग को स्वर्ग बनाना है!

□□

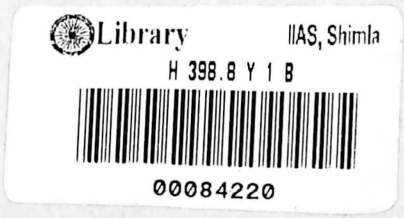

हिमाचल पुस्तक भण्डार
सरस्वती भण्डार, गांधी नगर, दिल्ली-110031